श्री राज स्यामाजी

श्री
कुलजम सरूप

श्री मुख वाणी

विजया अभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार
आखरूलजमां इमाम मेंहेंदी साहिब
पूर्णब्रह्म सच्चिदानंद अछरातीत

आधारित

श्री ५ पद्मावती पुरी धाम-पन्ना

श्री गुम्मट साहिब एवं

श्री बंगला साहिब

प्रकाशक

श्री निजानंद जागनी अभियान

18/1, तीर्थनगर सोसायटी, सोला रोड,

अहमदाबाद - 380 061

प्रस्तुतकर्ता एवं प्राप्तिस्थान

श्री निजानंद आश्रम

आजवा निमेटा क्रोसींग, नेशनल हाईवे नं.-8,
बायपास, सयाजीपुरा, वडोदरा - 390 019 (गुजरात)
फोन : 0265-2572843

श्री निजानंद आश्रम

मु.पो.रतनपुरी, वाया खतौली,
जिला - मुजफ्फरनगर - 251 201 (उत्तर प्रदेश)
फोन : 01396-282222

Nijanand Foundation (Int.), U.S.A.

260, Tabb Avenue, Piscataway,
N.J., 08854, U.S.A.
Ph. : 001-732 968 6336

मुद्रक

मोडर्न प्रिन्टींग प्रेस

नरोडा रोड, अहमदाबाद

फोन : 079-22819000

सूची पत्र

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	रास (प्रकरण 47)	**1-83**
1	हवे पेहेलां मोहजलनी	1-8
2	माया गई पोताने घेर	8-10
3	भूंडा जीव जागजे रे	10-13
4	प्रेम सेवा वाले प्रगट	13-14
5	एणे पगले आपण	14-16
6	अखंड सरूपनी अस्थिर	17-22
7	जोगमाया नो देह धरीने	23-24
8	पेहेलो सिणगार कीधो	24-28
9	वालैयो वाणी	28-33
10	जीवन सखी वृन्दावन	33-36
11	वाले वेख लीधो	36-37
12	मारे वालैए करी उमंग	37-38
13	वालैयो रमाडे रे	38-39
14	आवोरे सखियो आपण	40
15	वाला आपण रमिए	40-42
16	सखी वृखभान नंदनी	42-43
17	ओरो आव वाला आपण	43-44
18	भूलवणीनी रामत कीजे	44
19	आज राज पूरण काज	45
20	रामत गढ़ तणी रे	46
21	रामत कर तालीनी रे	46-47
22	उमंग उदयो साथ	47-48
23	ओरो आव वाला आपण	48-49
24	कोणियां रमिए रे मारा	49-50
25	आवो वाला रामत	50
26	सखी एक भांत रे	51
27	रामत आंबानी कीजे	51-52
28	रामत उडन खाटलीनी	52-53
29	वाला तमे निरत करो	53-54
30	मृदंग चंग, तंबूर रंग	54-55
31	हमचडी सखी संग	55
32	वृन्दावनमां रामत करतां	56-60
33	आनंदे रोतां रमिए	60-63
34	उछरंग अंग सुन्दरी	63
35	आपण रंग भर रमिए	64-65
36	रमत रास करत हांस	65
37	जुओ रे सखियो तमे	66
38	बलियामां दीसे बल	67-68
39	आवी केसरबाई कहे	68-69
40	छेड़ो न छटके	69-71
41	ऊभा ने रहो रे वाला	71-73
42	एणे समे रामत गमे	73
43	छेल छंछेरीने लीधी	74
44	सखी सखी प्रते	75
45	अणी हांरे झीलण	75-77
46	फरतण फेर बाजोटिया	77-79
47	वाला वालमजी मारा	79-83

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	प्रकास गुजराती-जंबूर (प्रकरण 37)	**85-177**
1	कांई एणी पेरे कीधूं	85
2	संभारो साथ	85-87
3	सकल साथ	87
4	न कांई मनमां न कांई	87-94
5	जुओ रे बेहेनी हूं	94-101
6	मूंजी सैयल रे	101-102
7	सजण विया मूंजा	102-103
8	खुई सा परडेहडो	103-104
9	हवे एक लवो जो	104-105
10	हवे विनती एक कहूं	105-108

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
11	हवे आपणमां बेठा	108-109
12	हवे गुणने लखूंजी	109-113
13	सांभलो साथ मारा	113
14	मूंजा अंध अभागी जीव	114
15	मूंहजा जीव अभागी रे	114-115
16	मूंजा जीव सुहागी रे	115-116
17	मूंजा साथ सुहागी रे	116-118
18	हूं ता पिउजीने लागूं	118-119
19	अखंड दंडवत करूं	119-120
20	हवे करूं ते अस्तुत	121-130
21	सांभल जीव कहुं वृतांत	130-132
22	हवे दृष्ट उघाडी जो	132-133
23	हवे वारी जाऊं वनराय	133-135
24	हवे अस्तुत ऊपर एक	135-137
25	खुई सा निद्रडी रे	137-139
26	खुईसो भरम जो घेंण	139-141
27	हांणे तूं म भूलज रे	141-142
28	भोरी तूं म भूल इंद्रावती	142-143
29	हूं जाणूं निध एकली लऊं	143-149
30	सुईने सुई सूता सूं	149-153
31	बेहदी साथ तमे सांभलो	153-165
32	वली वण पूछे कहूं विचार	165-167
33	सांभलो साथ कहूं	168-170
34	हवे वाली कहूं ते सुणो	170-172
35	हवे कांईक हूं मारी करूं	172-173
36	गुण केटला कहूं मारा वाला	174
37	हवे सैयरने हूं प्रगट कहूं	174-176

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	खटरूती	**179-202**
1	मारा वालाजी रे वल्लभ	179-180
2	सरदनी रुत रे सोहामणी	180-182
3	रुतने आवी रे वालैया	182-183
4	सीत रुत पिउजी तम	184-185
5	रुतडी आवी रे मारा वाला	185-187
6	वालाजी विना रुत ग्रीखम	187-189
7	सुणोने वालैया	189-191
8	वचन वालाजीना वालेरा	191-195
1	पिउजी तमे सरदनी रुते रे	195
2	वाला मारा हेमाले थी	196
3	वाला रुतडी आवी रे सीतलडी	196-197
4	वाला मारा आवी रे वसंत	197-198
5	वाला मारा आवी रे ग्रीखम	198-199
6	पावसियो आव्यो रे वरखा	199-200
7	वाला मारा खटरुतना	200-202

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	कलस गुजराती (प्रकरण 12)	**203-246**
1	रासनो प्रकास थयो	203-207
2	आ रामतना तमने	207-210
3	ए रामत मांहें जे रामतो	210-212
4	कोई कहे दान मोटो	212-214
5	अनेक किव इहां उपजे	214-216
6	वेद मोटो कोहेडो	216-219
7	एह छल तां एवो हुतो	219-223
8	आ जुओ रे आ जुओ रे	223-228
9	मारा सुंदरसाथ आधार	228-231
10	हो वालैया हवे ने हवे	231-233
11	मारा साथ सनमंधी चेतियो	233-235
12	हवे जागी जुओ मारा साथजी	235-246

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	प्रकास हिन्दुस्तानी-जंबूर (प्रकरण 37)	**247-349**
1	कछु इन विध कियो रास	247

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
2	याद करो तुम साथ जी	248-249
3	साथ सकल तुम याद करो	249-250
4	ना कछू मन में ना कछू	250-252
5	श्री सुंदरबाई स्यामाजी	252-255
6	ओहि ओहि करती फिरों	255-262
7	मेरी सैयल रे	262-263
8	पुकार चले मेरे पिउजी	263-265
9	एक लवो याद आवे सही	265-266
10	विनती एक सुनो मेरे प्यारे	266-269
11	आपन में बैठे आधार	269-270
12	मैं लिखूं श्री धनीजी के गुन	270-274
13	सुनो साथ मेरे सिरदार	274
14	मेरे अन्ध अभागी जीव	274-275
15	मेरे जीव अभागी रे	275-276
16	मेरे जीव सोहागी रे	276-277
17	मेरे साथ सोहागी रे	277-279
18	श्री धनीजी के लागूं पाए	279
19	अखंड दंडवत करुं परनाम	279-281
20	अब करुं अस्तुत आधार	281-291
21	सुन मेरे जीव कहूं वृतांत	291-293
22	आंखां खोल तूं आप अपनी	293-294
23	वारने जाऊं वनराए	294-296
24	अब अस्तुत ऊपर एक	296-298
25	भट परो तिन नींद को	298-300
26	भट परो नींद मोह की	300-302
27	अब तूं जिन भूल आतम	302-303
28	भोरी तूं न भूल इंद्रावती	303-304
29	मैं जानूं निध एकली लेऊँ	305-311
30	सोई न सोई सूते क्या करोजी	311-315
31	बेहद के साथी सुनो	315-329
32	हो वतनी बांधो कमर	329-332
33	सुनियो साथ कहूं विचार	332-335
34	अब कहूं सो हिरदे रख	335-337
35	अब कछुक मैं अपनी करूं	337-338
36	गुन केते कहूं मेरे पिउजी	338-339
37	निजनाम श्री जी साहिबजी	339-349

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	कलस गुजराती (प्रकरण 24)	**351-417**
1	सुनियो बानी सोहागनी	351-354
2	पिया मैं बोहोत भांत तोको	354-359
3	मैं चाहत न स्वांत इन भांत	359
4	पिया मोहे स्वांत न आवहीं	360-361
5	तलफे तारुनी रे	361-362
6	विरहा गत रे जाने सोइ	362-363
7	इस्क बड़ा रे सबन में	363-364
8	सनमंध मूल को	364-365
9	एह बात मैं तो कहूं	365-369
10	सत असत पटंतरो	369-371
11	पार वतन जो सोहागनी	371-373
12	भी कहूं मेरी सैयन को	374-375
13	अब निरखो नीके कर	375-378
14	अब देखाऊं इन विध	378-381
15	कोई कहे दान बड़ा	381-383
16	वैराट का फेर उलटा	383-385
17	अब कहूं कोहेड़ा वेद का	385-388
18	ए ऐसा था छल अंधेर	388-392
19	जिन किनको धोखा रहे	392-397
20	अब जोत पकरी न रहे	397-400
21	अब तो मेरे पिया की	400-403
22	मेरे साथ सनमंधी चेतियो	403-404
23	अब जाग देखो सुख	405-413
24	निजबुध भेली नूर में	413-417

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	सनंध	**419-566**
	(प्रकरण 42)	
1	अल्ला मुहवा मासूक	419-420
2	कलाम आरबी हक रसूल	421-422
3	भेख भाखा जिन रचो	422-423
4	सुनियो बानी मोमिनों	423-426
5	पिया मैं विध-विध तोको	427-433
6	मैं चाहत न स्वांत इन भात	433
7	तलफे तारुनी रे	434-435
8	विरहा गत रे जाने सोई	435
9	इस्क बड़ा रे सबन में	435-437
10	सनमंध मूल को	436-437
11	एह बात मैं तो कहूं	437-441
12	जब ढूंढों रूहें अर्स की	442-443
13	अब निरखो नीके कर	443-446
14	अब गुझ बताऊं खेल का	446-449
15	अजूं देखाऊं नीके कर	450-452
16	ए खेल रच्यो हम खातिर	452-454
17	ए खेल देख्या ख्वाब का	454-458
18	मोमिन यामें न रांचहीं	458-460
19	ए जो फरेब तुम देखिया	460-464
20	फुरमान ल्याया जो रसूल	464-469
21	सुनियो अब मोमिनों	469-473
22	गुझ तो तुम को कहूंगी	473-479
23	दिल हकीकी रूहें अर्स की	479-483
24	केहेती हों मोमिन को	483-491
25	कही कजा जो रसूलें	491-495
26	नेक कहूं दोजख की	495-498
27	अब नींद उड़ी सबनकी	498-500
28	इत आए करी जो रसूलें	500-503
29	अब सो कहां है महंमद	503-506
30	खातिर प्यारी रूहें मोमिन	507-510
31	जिन मोमिन के कारने	510-514
32	प्रताप इमाम कहा कहूँ	514-518
33	सुनियो दुनियां आखिरी	518-521
34	सम्मेन कलिम कलामी	521-523
35	कारण अरवा अर्सजी	524-526
36	इत ईसा मसी आए के	526-532
37	अब कहूं विध नूरियों	532-541
38	हुकमें परदा उड़ाइया	541-546
39	कहया जाहेर रसूलें	547-553
40	लिख्या है कतेब में	553-557
41	तुमको देऊँ सुख जागनी	557-563
42	प्रीतम मेरे प्रान के	563-566

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	किरंतन	**567-755**
	(प्रकरण 133)	
1	पेहेले आप पेहेचानो रे	567
2	बिंद में सिंध समाया रे	568
3	साधो भाई चीन्हों सब्द	568-569
4	साधो हम देख्या बड़ा	569-570
5	सुनो रे सत के बनजारे	570-571
6	भाई रे बेहद के बनजारे	571-573
7	हो मेरी वासना तुम चलो	573-574
8	हो भाई मेरे वैस्णव कहिये	574
9	कहा भयो जो मुखथें कह्यो	575
10	सुनो भाई संतो कहूँ रे	575-576
11	रे हूँ नाहीं रे हूँ नाहीं	576-577
12	वचन विचारो रे मीठड़ी	577-579
13	आज सांच केहेना सोतो	579-581
14	धनी न जाए किन को	581-582
15	पतित सिरोमन यों कहे	582-583
16	दुख रे प्यारो मेरे प्रान	583-584
17	सखीरी आतम रोग बुरो	584-587
18	मैं तो बिगड़या विश्व थें	587-588

प्रकरण	विषय	पृष्ठ	प्रकरण	विषय	पृष्ठ
19	तुम समझ के संगत की जो	588-589	52	सतगुर मेरा स्याम जी	616-618
20	साधो या जुग की ए बुध	589	53	धनी जी ध्यान तुमारे रे	618-619
21	चल्यो जुग जाए री सुध	589-590	54	हो साथ जी वेगे ने वेगे	619-621
22	रे हो दुनियां बावरी	590-591	55	आए आगम बानी इत	621-623
23	रे हो दुनियां को तूं कहा	591	56	भई नई रे नवों खंडों आरती	623-625
24	रे मन भूल न महामत	592	57	कृपा निध सुंदरवर स्यामा	625-626
25	रस मगन भई सो क्या	592-593	58	राजा ने मलो रे राणे राय	626-627
26	खोज बड़ी संसार रे	593	59	ऐसा समे जान आए	628
27	कहो कहोजी ठौर नेहेचल	594-595	60	कुली बल देखो रे	628-630
28	मैं पूछों पांडे तुम को	596-597	61	साहेब तेरी साहेबी भारी	631-633
29	संत जी सुनियों रे	597-598	62	मांगत हों मेरे दुलहा	633-635
30	चीन्हे क्यों कर ब्रह्म को	599-600	63	जिन सुध सेवा की नहीं	635-337
31	कलि में देख्या ग्यान	600-601	64	तमें वाणी विचारी न	637-639
32	भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म	601-602	65	ए माया आद अनाद की	639-640
33	रे जीव जिन करो	602-604	66	सैयां मेरी सुध लीजियों	641-643
34	रे जीव जी तुमें लागी	604-606	67	वाटडी विसमी रे साथीडा	643-644
35	वालो विरह रस भीनों	607	68	अटकलें ए केम पांमिए	644-646
36	हांरे वाला रल झलावियो	607	69	सुन्य मंडल सुध जो जो	646
37	हांरे वाला बंध पड़्या बल	607-608	70	हवे वासना हसे जे वेहदनी	646-648
38	केम रे झंपाय अंग ए रे	608	71	लाड़लियां लाहूत की	648-649
39	हांरे वाला कां रे आप्या	608	72	जंजीरां मुसाफ की	650
40	हांरे वाला अगिन उठे	609	73	जो कोई सास्त्र संसार में	650-654
41	करनी तुमारी मेरी मैं तौली	609-610	74	भवजल चौदे भवन	654-657
42	मीठडा मीठा रे	610-611	75	मेरे धनी धाम के दुलहा	657-658
43	विनता विनवे रे	611	76	निजनाम सोई जाहेर हुआ	658-660
44	म्हारा वस कीधल वाला रे	611	77	वतन बिसारियां रे	661-662
45	आवोजी वाला म्हारे घेर	612	78	सखीरी जान बूझ क्यों	662-663
46	प्रीत प्रगट केम कीजिए	612	79	साथजी पहचानियों	663-666
47	खोज थके सब खेल खसम	613	80	मेरे मीठे बोले साथजी	666-667
48	खिन एक लेहु लटक	613-614	81	सुँदर साथजीए गुन	667-668
49	बाई रे वात अमारी हवे	614	82	सखीरी मेहेर बड़ी	669-671
50	बाई रे गेहेलो वालो गेहेली	614-615	83	धंन धंन ए दिन साथ	671-672
51	आज वधाई वृज घर घर	615	84	धंन धंन सखी मेरे सोईरे	672-673

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
85	ए जो कही जागन	673-675
86	साथ जी जागिए	675-676
87	आग परो तिन कायरों	677-678
88	सैयां हम धाम चले	678-679
89	चलो चलो रे साथ	679-680
90	साथजी सोभा देखिये	681-683
91	आगूँ आसिक ऐसे	683-684
92	अब हम धाम चलत हैं	685-686
93	अब हम चले धाम को	686-688
94	सुनों साथजी सिरदारो	688-691
95	सोई सोहागिन धाम मे	691-693
96	तो भी घाव न लग्यारे	693-696
97	इन धनी के बान मोको	696-698
98	तो भी चोट न लगी रे	698-699
99	धिक धिक पड़ो मेरी	699-700
100	धनी एते गुन तेरे	700-701
101	साथजी सुनो सिरदारो	701-702
102	बुजरकी मारे रे साथजी	702-703
103	जो तूँ चाहे प्रतिष्ठा	703-704
104	कयामत आई रे साथजी	704-705
105	मैं पूछत हों ब्रह्मसृष्ट को	705-706
106	ऐ सुच कैसे होवहीं	706-707
107	झूठ सब्द ब्रह्माण्ड में	708
108	फुरमान मेरे मेहेबूब का	709-713
109	मासूक मेरे रुह चाहे	713-715
110	कारी कामरी रे	715-716
111	फरेबी लिएँ जाए	716-717
112	सरुप सुँदर सनकूल	717-718
113	चतुर चौकस चेतन अति	718
114	नूर को रूप सरूप अनूप	718-719
115	हुब मेहेबूब की आसिक	719
116	नूर नगन चेतन भूखन	719
117	मिली मासूक के मोहोल में	719-720
118	मोमिन लिखे मोमिन को	720-721
119	वारी रे वारी मेरे प्यारे	721-722
120	साथजी ऐसी मैं तुमारी	722-723
121	सिफत तो सारी शब्द में	723-724
122	ब्रह्मसृष्टी बीच धाम के	724-725
123	स्यामाजी स्याम के संग	725
124	हम चड़ी सखी संग रे	726
125	वृथा कां निगमो रे	727-730
126	तमें जो जो रे मारा	730-741
127	पर न आवे तोले एकने	741-742
128	माया कोहेडो अंधेर केहेवाय	742-747
129	हांरे मारा साध कुलीना	747-749
130	धोरीडा मा मूके तारी धूसरी	750
131	आवो अवसर केम भूलिए	750-752
132	अन्दर नाहीं निरमल	752-753
133	विसराई गिन्यो वंजे	753-755

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	खुलासा (प्रकरण 18)	**757-844**
1	ए होत फुरमाया	757-765
2	ए देखो खुलासा गिरो दीन	766-773
3	हक हादी रूहनसों	773-779
4	असल खुलासा इसलाम	779-785
5	मोमिन आए अर्स	786-790
6	फुरमाया कहूं फुरमान का	790-791
7	हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी	792-794
8	जो उमत होवे अर्स की	794-796
9	बुलाइयां निसबत जान के	796-799
10	पढ़े तो हम हैं नहीं	799-806
11	अब कहूं विध निगम	806-807
12	दौड़ करी सिकंदरें	807-812
13	कंसे कालागृह में	812-821

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
14	अब कहूं कुरान की	821-823
15	बरस नब्बे हजार पर	823-827
16	केहेती हो उमत को	827-836
17	कहूं अर्स अरवाहों को	836-843
18	अब तुम निकसो नींद से	843-844

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	खिलवत (प्रकरण 16)	**845-936**
1.	ऐसा खेल देखाइया	845-849
2.	हम लिए कौल खुदाए के	850-852
3.	मैं बिन मैं मरे नहीं	853-858
4.	ज्यों जानों त्यों रखो	858-863
5.	यों कई देखाई माया	863-867
6.	गैब बातें मेहेबूब की	867-871
7.	ए इलम इन वाहेदत का	871-874
8.	साकी पिलावें सराब	874-879
9.	देख तूँ निसबत अपनी	879-882
10.	रे रूह करे ना कछु	883-889
11.	खिलवत हक रूहन की	889-896
12.	हाय हाय क्यों न सुनो रूहें	896-905
13.	ल्याओ बुलाए तुम रूह	905-910
14.	रूहअल्ला सुभाने भेजिया	910-919
15.	आसिक मेरा नाम रूह	919-926
16.	मेहेर हुई महंमद पर	926-936

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	परिकरमा (प्रकरण 44)	**937-1150**
1	अब कहूं रे इस्क की बात	937-942
2	ब्रह्मसृष्टी लीजियो	943-944
3	अब आओ रे इस्क भानूं	944-961
4	तुम को इस्क उपजावने	961-963
5	वतन आपनों	963-968
6	कतरे कई केलन के	968-973
7	सातों घाट बीच में	973-977
8	अब कहूँ मैं ताल की	977-986
9	बन्यो ताल के बीच में	986-990
10	और पीछल पाल तलाव के	990-992
11	ए जो बड़ा चबूतरा	992-999
12	फेर कहूँ तले बन की	999-1001
13	सुख लीजो मोमिन	1001-1008
14	मोहोल के तले ताल जो	1008-1016
15	किनारे मोहोल जोए के	1016-1019
16	तुम देखो दिल में	1019-1021
17	पार जमुना जो बन	1021-1022
18	क्यों दियो रे बिछोहा	1023-1025
19	भोम तले की बैठाए के	1025-1027
20	दोऊ कमाडो की क्यों	1027-1030
21	और सुख सातों घाट के	1030-1032
22	अब ताल पाल की क्यों	1032-1033
23	सुख नेहरों का अलेखें	1034-1035
24	पहाड़ मानिक मोहोल कई	1035-1036
25	बन छाया है मोहोल जो	1036-1037
26	सुख क्यों कहूं पहाड़	1037-1042
27	एह निमूना ख्वाब का	1042-1048
28	खावंद इनों में खेलहीं	1048-1052
29	अस्वारी पसु-पंखियन	1052-1060
30	पेहेले किया बरनन	1060-1069
31	बड़ा चौक सोभा लेत	1069-1083
32	गैब बातें बका अर्स	1083-1090
33	अब देखो अन्दर अर्स	1091-1093
34	बेवरा अगली भोमका	1093-1105
35	बड़ीरूह रूहें नूर में	1105-1107
36	नूर तरफ पाट-घाट नूर	1108-1112
37	कहे आमर नूर अर्स का	1112-1124
38	बरनन धाम को	1125-1131
39	प्रेम देखाऊँ तुमको साथजी	1132-1138
40	एक चित्रामन दिवालें	1139

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
41	एक अंग अभिलाखी देवें	1140
42	कहियत नेहेचल नाम	1141-1143
43	नूर कुंजी अगिन मुसाफ	1143-1148
44	साथजी देखो मोहोल मानिक	1148-1150

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	सागर (प्रकरण 15)	**1151-1247**
1	भोम तले की क्यों कहूं	1151-1161
2	हक बैठे रूहों मिलाए के	1161-1164
3	लेहेरी सुख सागर की	1164-1166
4	अब कहूं सागर तीसरा	1166-1169
5	चौदे तबक की दुनी में	1169-1181
6	बरनन करूं बड़ी रूह	1181-1193
7	इन विध साथजी	1193-1196
8	अर्स तुमारा मेरा दिल	1196-1206
9	बरनन करूं बड़ी रूह की	1206-1219
10	फेर फेर सरूप जो निरखिए	1219-1226
11	सुन्दर साथ बैठा अचरज सों	1226-1231
12	पांचमा सागर पूरन	1231-1235
13	सागर छठा है अति बड़ा	1235-1239
14	अब कहूं दरिया सातमा	1240-1243
15	और सागर जो मेहेर का	1243-1247

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	सिनगार (प्रकरण 29)	**1249-1436**
1	बरनन करो रे रूह जी	1249-1254
2	अब हुकमें द्वारा खोलिया	1254-1260
3	आसिक इन चरन की	1260-1266
4	ऐसा आवत दिल हुकमें	1266-1272
5	सखीरी तेज भरयो	1272-1273
6	फेर फेर चरन को निरखिए	1274-1279
7	ए क्यों छोड़े चरन	1279-1286
8	उमर जात प्यारी सुपने	1286-1293
9	अर्स अन्दर सुख देवहीं	1294-1295
10	असल इजार एक पाचकी	1295-1296
11	रूह मेरी क्यों न आवे	1296-1303
12	मुख मेरे मेहेबूब का	1303-1309
13	श्रवन की किन विध	1309-1313
14	देखों नैना नूरजमाल	1313-1317
15	गौर निरमल नासिका	1317-1318
16	जाको नामै रसना	1318-1324
17	देत नमूना बीच नासूत	1324-1328
18	भूखन सब्दातीत के	1328-1334
19	फेर फेर पट खोलें हुकम	1334-1339
20	हक इलम के जो आरिफ	1339-1352
21	याद करो हक मोमिनों	1352-1371
22	क्यों बरनों हक सूरत	1371-1385
23	अरवा आसिक जो अर्स	1385-1397
24	सोई कहूं हकीकत मारफत	1397-1405
25	इस्क रब्द खिलवत में	1405-1413
26	बसरी मलकी और हकी	1413-1415
27	एता मता तुम को दिया	1415-1420
28	बरनन कराए मुझपे	1420-1424
29	रूहो मैं-रे तुमारा आसिक	1424-1436

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	सिंधी (प्रकरण 16)	**1437-1489**
1	आखिर वेरा उथणजी	1437-1442
2	रे पिरीयम हथ तोहिजडे	1442-1443
3	रे पिरीयम, मंगा सो लाड	1444-1446
4	रे पिरीयम, मंगा सो लाड	1446-1448
5	सांगाए थिंदम धाम	1448-1453
6	धणी मूंहजी रूहजा	1454-1458

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
7	वलहा जे आऊं तोके	1458-1466
8	रूहअल्ला डिन्यूं निसानियूं	1466-1470
9	चई सुंदरबाई असां के	1470-1474
10	सुणो रूहें अर्स जी	1474-1477
11	लखें भतें न्हारयम	1477-1479
12	ताडो कुन्जी ना दर उपटण	1479-1481
13	कांध रूह भाइयां	1481-1482
14	सुनो रूहें अर्स की	1482-1485
15	मैं लाखों विध देखिया	1485-1487
16	ताला द्वार न कुंजी खोलना	1487-1488

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	मारफत सागर (प्रकरण 17)	**1491-1582**
	मसौदा	1491-1492
1	पेहेले कहूं अव्वल की	1493-1499
2	तिस वास्ते दुनी पैदा	1499-1504
3	फिरके नारी तो कहे	1504-1514
4	जो लों पट न खोल्या	1514-1523
5	तीनों फिरस्तों का बेवरा	1524-1529
6	जैसा अमल रात का	1529-1533
7	मांगी रसूलें रेहेमत	1533-1535
8	आए लिखे बड़ी दरगाह	1535-1537
9	कह्या दज्जाल अस्वार	1537-1539
10	कह्या मगरब ऊगसी	1539
11	कहे आजूज माजूज	1539-1542
12	चारों निसान ए कहे	1543-1551
13	जाए इलम पोहोंच्या	1551-1554
14	कह्या झण्डा उठ्या	1554-1556
15	फरदा रोज पेहेले	1557-1560
16	भाई मंहमद के मोमिन	1560-1570
17	तो असराफीलें आखिर	1570-1580
	मसौदा	1581-1582

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	छोटा कयामतनामा (प्रकरण 2)	**1583-1601**
1	जो नूर पार अर्स	1583-1592
2	जेते पैगंमर भए	1593-1601

प्रकरण नम्बर	विषय	पृष्ठ
	बड़ा कयामतनामा (प्रकरण 24)	**1603-1648**
1	खास उमतसों कहियो	1603-1606
2	एक तो कहे अल्ला कलाम	1607
3	लिख्या चौथे सिपारे	1608-1610
4	तीसरे सिपारे बड़ा जहूर	1610-1612
5	लिख्या माहें नामें नूर	1612-1615
6	हो सैंया फुरमान ल्याए	1616-1619
7	हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां	1619-1622
8	लिख्या सिपारे आखिरे	1622-1629
9	लिख्या सिपारे सूरतों	1629-1631
10	चौथे सिपारे में लिखी	1631-1632
11	ए रोज नाहीं खिलाफ	1632-1633
12	कुरान तफसीर जो हुसेनी	1633-1635
13	ए सिपारे पेहेले की कही	1635
14	औलाद याकूब कह्या इस्हाक	1636-1368
15	छिपके साहेब कीजे याद	1638
16	ए जंजीर सिपारे सोल में	1639
17	कह्या आम सिपारे माहें	1639-1640
18	सिपारा आम आधा पूरन	1640
19	तीन दिन कहे जो बुजरक	1641
20	जिनको कयामत की है	1642
21	लिख्या आम सिपारे सूरत	1642-1643
22	महंमदें जाहेर करी दावत	1643-1647
23	दिन कयामत के पूरे कहे	1647-1648
24	नौमी आगे अरफा ईद	1648

❖ श्री तारतम ❖

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥१॥
श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत सुख के दातार ।
विनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की अविधार ॥२॥
वानी मेरे पिउकी, न्यारी जो संसार ।
निराकार के पार थें, तिन पारके भी पार ॥३॥
अंग उत्कण्ठा उपजी, मेरे करना एह विचार ।
ए सत वानी मथ के, लेऊं जो इनको सार ॥४॥
इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार ।
ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार ॥५॥
जब ए सुख अंगमें आवहीं, तब छूट जाए विकार ।
आयो आनन्द अखण्ड घर को, श्री अछरातीत भरतार ॥६॥

❖ श्री तारतम ❖

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भये, सब विध वतन सहीत ॥१॥
श्री देवचन्दजी सत्य छे, सदा सत सुख ना दातार ।
विनतडी एक जो वल्लभा, मो अंगनानी अविधार ॥२॥
वाणी वालाजी तणी, अलगी जे संसार ।
निराकार ने पार थी, ते पार ने वली पार ॥३॥
अंग उत्कण्ठा उपनी, मारे करवो एह विचार ।
आ सत्य वाणी मथी मांहेंथी, लेवो छे सर्वे सार ॥४॥
ए सार मांहें कई सत सुख, ते निरणे करूं निरधार ।
ए सुख देऊं मारा साथ ने, तो हूं अंगना नार ॥५॥
ज्यारे ए सुख अंगमां आवसे, त्यारे छूटी जाए विकार ।
आव्यो आनन्द अखण्ड घर तणो, श्री अछरातीत भरतार ॥६॥